११. भारती का सपूत

– रांगेय राघव

लेखक परिचय : रांगेय राघव जी का जन्म १७ जनवरी १९२३ को आगरा (उत्तर प्रदेश) में हुआ । आपकी संपूर्ण शिक्षा आगरा में हुई, वहीं से आपने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आंचलिक, ऐतिहासिक तथा जीवनीपरक उपन्यास लिखने वाले रांगेय राघव जी के उपन्यासों में भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण प्राप्त है। आपने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सृजनात्मक लेखन करके हिंदी साहित्य को समृद्धि प्रदान की है। रांगेय राघव जी की मृत्यु १९६२ में हुई।

प्रमुख कृतियाँ : 'लोई का ताना', 'भारती का सपूत' (जीवनीपरक उपन्यास), 'कब तक पुकारूँ' (उपन्यास), 'अंगारे न बुझे' (कहानी संग्रह), 'पिघलते पत्थर' (काव्य संग्रह), 'विरूढक' (नाटक), 'संगम और संघर्ष' (आलोचना) आदि।

विधा परिचय : 'उप' का अर्थ समीप तथा 'न्यास' का अर्थ थाती अर्थात मनुष्य के निकट रखी वस्तु। 'उपन्यास' गद्य साहित्य का वह रूप है जिसमें जीवन का बहुत बड़ा पटल चित्रित रहता है । यह हमारे जीवन का प्रतिबिंब होता है जिसको प्रस्तुत करने में कल्पना का प्रयोग आवश्यक है । उपन्यास महान सत्यों और नैतिक आदर्शों का एक अत्यंत मूल्यवान साधन है । इसमें लोकप्रियता और महनीयता का अद्‌भुत समन्वय होता है । मानव जीवन का सजीव चित्रण उपन्यास है।

पाठ परिचय : प्रस्तुत अंश जीवनीपरक उपन्यास से लिया गया है। इसमें किसी व्यक्ति के जीवनवृत्त को आधार बनाकर कल्पित प्रसंगों की सहायता से औपन्यासिक स्वरूप दिया जाता है। इसमें हिंदी गद्य के जनक भारतेंदु के जीवन के विविध पहलुओं का रोचक ढंग से परिचय कराया गया है। बचपन से ही साहित्य एवं शिक्षा के प्रति रुझान ने भारतेंदु को हिंदी साहित्य जगत का देदीप्यमान इंदु अर्थात चंद्रमा बना दिया। अंग्रेजों की नीतियाँ, सामाजिक कुरीतियाँ एवं अशिक्षा के खिलाफ भारतेंदु द्‌वारा जगाई अलख को उपन्यासकार ने अपनी लेखनी से और भी प्रज्वलित किया है।

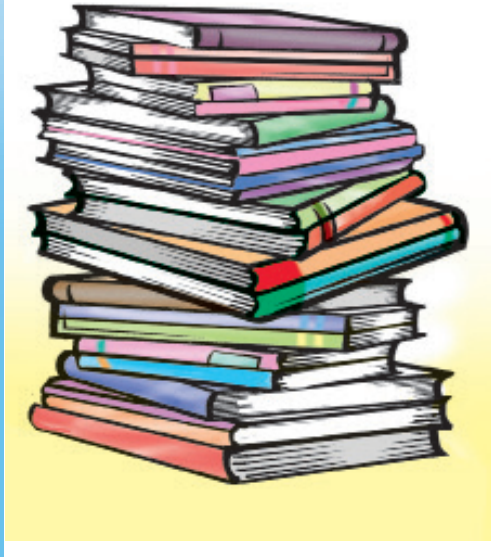

अध्यापक रत्नहास उठ खड़े हुए। उन्होंने दीवार पर टँगे हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र के विशाल चित्र को देखा और फिर उपस्थित सज्जनों और स्त्रियों से कहा, 'भाइयो और बहनो ! मैंने आपको आज एक विशेष कारण से निमंत्रित किया है।'

अध्यापक की आँखों में चमक थी। आने वाले सभी लोग उनसे परिचित थे। अतः सबमें कौतूहल जाग उठा था।

श्रीमती अनुराधा ने कहा – ''आज भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्मदिवस है, हम लोग उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने को ही तो यहाँ एकत्र हुए हैं ?''

अध्यापक रत्नहास ने कहा, ''अच्छा तो सुनिए ! यह इस पुस्तक की भूमिका है – इसे सुनकर आपको लगेगा कि सौ बरस पहले लोग अपने से सौ बरस बाद के युग के बारे में क्या सोचते थे जिसमें हम रहते हैं। उसका प्रारंभ सौ बरस पहले हुआ था और जिस युग में भारतेंदु की जीवनी लिखने वाला लेखक था, उस युग का प्रारंभ स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया था। आज्ञा है ?''

अध्यापक ने किताब उठाकर देखा और पढ़ने लगे... भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी के पिता माने जाते हैं। महाकवि रत्नाकर ने उन्हें 'भारती का सपूत' कहा है।

भारतेंदु भारतीय स्वतंत्रता के पहले संग्राम के समय सात बरस के थे अर्थात १८५० में उनका जन्म हुआ था। उनकी मृत्यु ३४ वर्ष ४ महीने की अवस्था में १८८५ में हुई थी।

भारतेंदु के जन्म के समय उच्च वर्गों का बहुत बड़ा असर था। उच्च कुलों का ही सम्मान था। अतः भारतेंदु को यदि उस समय इतना अधिक महत्त्व दिया गया था तो उसमें कुछ अंश तक उनके कुल का भी प्रभाव था परंतु उनसे अधिक धनी और उच्च कुल के लोग भी मौजूद थे। उनका इतना नाम क्यों न हुआ ? यही बात स्पष्ट कर देती है कि वह व्यक्ति कुल के कारण नहीं वरन् अपनी प्रतिभा और महत्त्व के कारण प्रसिद्ध हो सका था। भारतेंदु ने अपने साहित्य में कुल वर्ग का पोषण नहीं किया, यह उनके व्यक्तित्व के विकासशील होने का बड़ा सशक्त प्रमाण है। भारतेंदु ने कुल के गर्व को दुहराने के बजाय देश के गर्व को दुहराया है। भारतेंदु की बुद्धि काशी में प्रसिद्ध थी। मात्र पाँच वर्ष की अवस्था में उन्होंने कविताएँ रचना शुरू कर दिया था। तेरह वर्ष की अवस्था में भारतेंदु हरिश्चंद्र का विवाह शिवाले के रईस लाला गुलाबराय की पुत्री मन्नोदेवी से बड़ी धूमधाम के साथ हुआ। सत्रह वर्ष की उम्र में उन्होंने नौजवानों का एक संघ बनाया और उसके दूसरे ही बरस एक वाद-विवाद सभा (डिबेटिंग क्लब) स्थापित की। इस सभा का उद्देश्य भाषा और समाज का सुधार करना था। अठारह वर्ष की आयु में वे काशी नरेश की सभा बनारस इन्स्टिट्यूट और ब्रह्मामृत वार्षिक सभा के प्रधान सहायक रहे। साथ ही कविवचन – सुधा नामक पत्र निकालना प्रारंभ किया। इन्हीं दिनों होम्योपैथिक चिकित्सालय खोला जिनमें मुफ्त दवा बँटती थी। अध्यापक रत्नहास ने किताब पर से नजर हटाई और कहा, ''भारतेंदु तो फक्कड़ आदमी थे, निडर आदमी थे। साहित्य में उनकी रुचि बचपन से ही जाग्रत हो गई थी। पिता कविता करते थे। उसका असर उनपर भी पड़ा। अपनी कविताओं की धाक उन्होंने मात्र ६ वर्ष की अवस्था से ही जमा ली थी।''

अध्यापक रत्नहास रुके और पूछा, ''आगे पढ़ूँ?'' अध्यापक मुस्कुराए और पढ़ना शुरू किया।

हरिश्चंद्र को इतना ही याद था कि पिता कुछ लिखते रहते थे और बहुत-बहुत-सा लिखते थे। पिता 'बलराम-कथामृत' लिख रहे थे। हरिश्चंद्र पास बैठा बड़े गौर से देख रहा था। उसने हठात् कहा, 'बाबू जी !'

'क्या है रे।' पिता चौंके।

'बाबू जी मैं कविता बनाऊँगा। बनाऊँ ?'

पिता ने आश्चर्य से देखा और कहा, 'तुम्हें अवश्य ऐसा करना चाहिए।'

हरिश्चंद्र की बाँछें खिल गईं। वह उठ खड़ा हुआ और कुछ गाने लगा...

पिता ने सुना तो गद्गद् होकर रो उठे।

छठवाँ वर्ष लग रहा था। पिता अपनी 'कच्छप-कथामृत' सुना रहे थे, सोरठा पढ़ा –

करन चहत जस चारू
कछु कछुवा भगवान को।

महफिल में इसके अर्थ को लेकर चर्चा चल पड़ी। हरिश्चंद्र सुनता रहा। हठात् वह बोल उठा 'बाबू जी !'

'क्या है बेटा।'

सब चौंक पड़े।

'बाबू जी हम इसका अर्थ बता दें।'

'बताओ बेटा' ! महफिल के लोगों में भी कुतूहल जाग उठा। बालक ने आतुरता से कहा, 'आप वह भगवान का जो वर्णन करना चाहते हैं, जिसको आपने कछुक छुवा है अर्थात जान लिया है।'

'वाह-वाह !' का कोलाहल हो उठा। 'धन्य हो, 'धन्य हो !' की आवाजें उठने लगीं।

×× ××

अध्यापक रत्नहास ने एक साँस ली और पढ़ना छोड़कर कहा, ''यहाँ भारतेंदु हरिश्चंद्र की जीवनी लिखने वाले ने विस्तार से भारतेंदु की पत्नी के चिंतन को व्यक्त किया है। आज्ञा हो तो पढ़ना शुरू करूँ ?''

''अवश्य !'' अनुराधा ने कहा।

''अच्छी बात है'' कहकर उन्होंने मन्नो बीबी का चिंतन पढ़ना शुरू किया - मैं उनकी पत्नी हूँ। मैं उनके बारे में कितना जानती हूँ, यह मैं बार-बार सोचने का प्रयत्न करती हूँ किंतु मुझे लगता है कि मेरा पति उतना ही नहीं था जितना वह दिखाई देता था। व्यक्ति के रूप में यदि अपने तारतम्य से दूसरों का तादात्म्य नहीं कर पाते तो वे न अपने आपको सुखी कर पाते हैं, न दूसरों को ही। उन्होंने (हरिश्चंद्र) घर पर ही अंग्रेजी और हिंदी की पाठशाला खोली थी। मैंने पूछा था - 'क्यों ? आपको इसकी जरूरत ही क्या थी ?'

उन्होंने कहा था, 'मन्नो बीबी !' फिर कुछ सोचने लगे थे। 'आप रुक क्यों गए ?'

'मैं नहीं जानता, तुम समझ सकोगी या नहीं।

क्यों ?'

'क्योंकि हम लोगों के पास धन है और देश भूखा है, गरीब है। सोचो तो अंग्रेजों के खोले हुए स्कूल हैं। मिशन के स्कूल हैं। पर उनमें हमारी संस्कृति नहीं पढ़ाई जाती।'

'तो क्या आप अंग्रेजी नहीं पढ़ाएँगे यहाँ ?'

पढ़ाऊँगा मन्नो बीबी ! पर इस मदरसे में एक भाषा को ही तो पढ़ाया जाएगा। मुझे भारतीय संस्कृति चाहिए ताकि अंग्रेजी पढ़कर लोग जान सकें कि अंग्रेज किन खूबियों की वजह से हुकूमत करते हैं, न कि काले साहब बनकर दोगलों की तरह अपनों से ही नफरत करने में घमंड कर सकें। इस देश को बहुत-बहुत पढ़े-लिखे लोगों की जरूरत है। इसके लिए नये इनसानों की एक फसल खड़ी करनी होगी।'

मैं उस सबको ठीक से समझ नहीं सकी थी परंतु उनके मुख पर गहरी वेदना थी। पाँच विद्यार्थी से बढ़ते-बढ़ते जब तीस विद्यार्थी हो गए तब देवर (गोकुलचंद्र) और वे बातें करने लगे। दोनों स्वयं ही उस मदरसे में पढ़ाते थे और उन्होंने निश्चित करके एक अध्यापक को पढ़ाने के लिए वेतन देकर रख लिया। कुछ ही महीनों में विद्यार्थियों की संख्या इतनी बढ़ गई कि चौखंभा में स्कूल को बाबू वेणीप्रसाद के घर में ले जाया गया। आधे से ज्यादा लड़के बिना फीस दिए पढ़ते थे। किताबें और कलम मुफ्त बँटवाते हुए जब मैं उन्हें देखती थी तब मुझे लगता था, वे बहुत प्रसन्न हो जाते थे। लगता था, उनमें कोई उत्साह-सा था। फिर तो वे लड़कों को मुफ्त खाना भी बँटवाने लगे।

कश्मीरी मास्टर विश्वेश्वरप्रसाद ने न जाने क्या आज्ञा भंग की कि उन्होंने उसे निकाल दिया। वेणीप्रसाद भी उसी से जा मिला और रातों-रात स्कूल घर पर ही उठवा लाए। शत्रुओं ने वही चाल चली कि वे चौखंभा में न दूसरा स्कूल चलाएँ, न घर आकर धरना देने पर ही वे रोक सकें। इस हलचल में मैंने देखा वे नितांत शांत थे। मैंने कहा था, वे लोग नासमझ हैं। आप क्यों ऐसों के लिए सिर खपाते हैं।

वे मुस्कराए। कहा था, 'नासमझ नहीं हैं मन्नो बीबी ! वे अशिक्षित हैं। वे अपने स्वार्थों के परे सोचना नहीं जानते। बीज जब धूल में मिल जाता है, तब ही वह वृक्ष बन पाता है, वे यह नहीं समझना चाहते।' मुझे लगा था, वह एक अहंकार था परंतु किसका अहं था ?

मैंने कहा, 'पुरखों ने कमाकर रख दिया है न ? तभी आपका हाथ इतना खुला है। उन लोगों को अपनी ही मेहनत से धन कमाना पड़ता है। तभी वे लोग एक-एक पैसा दाँत से पकड़कर चलते हैं। वे अक्लमंद हैं। आदमी जिस पेड़ पर बैठा होता है, उसे ही तो नहीं काटता।'

वे मेरी ओर देखते रह गए थे। उनकी घुँघराली लटें कानों पर झूल रही थीं। उनकी लंबी पर पतली आँखों में एक दूर तक डुबो देने वाली स्याह गहराई दिखाई दे रही थी, मानो मैं उनके सामने होकर भी नहीं थी।

वे मुझे ऐसे देख रहे थे, जैसे मैं काँच की बनी थी।

व्यक्ति का जीवन वही तो नहीं है, जो उसके बाह्य से झलकता है। कवि हृदय थे, अतः कविता लिखते थे। वैभव था इसलिए दान देते थे, सुलझे हुए थे अतः देशभक्त थे और फिर शाहखर्ची थी इसलिए कि पिता की यह परंपरा थी, प्रसिद्ध हो गए थे। अतः देश के बड़े-बड़े पदाधिकारी, राजा और प्रसिद्ध लोग उनसे मिलते थे। वे नाटक करते थे, लिखते थे, इतना तो अधिक नहीं है। जीए ही कितने ? चौतीस बरस, चार महीने।'

अध्यापक रत्नहास ने पुस्तक बंद करते हुए कहा, ''यह था भारतेंदु का वह उदय का समय जब वे तरुण हो चुके थे। आपने देखा, वह एक साथ ही कितने काम करते थे। वे लेखक थे, पत्रकार थे और इसके अतिरिक्त समाज के दैनिक जीवन में उनकी कितनी दिलचस्पी थी ! उस समय डिबेटिंग क्लब और यंग मेंस एसोसिएशन खोलकर उन्होंने मूक हुए देश को वाणी और स्फूर्ति देने की चेष्टा की थी। दवाखाना खोलते समय उनके मन में देश की गरीब जनता के प्रति वैसा ही प्रेम था जैसा विद्यार्थियों के प्रति था। उन्नीस वर्ष की आयु में उनको महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मान लिया गया था। इसी से उनकी मेधा स्पष्ट हो जाती है।''

अध्यापक रत्नहास ने कुछ पल रुककर पुस्तक उठाई और पढ़ने लगे -

'बाबू साहब की कैसी तबीयत है ?'

'ठीक नहीं है।'

मल्लिका मन-ही-मन काँप गई।

भारतेंदु शय्या पर पड़े थे। मलिन रुग्ण।

मल्लिका ने देखा तो आँखें फटी रह गईं। कहाँ गया वह चपल रूप, वह दबंग उत्साह। यही तो था जो उन्मुक्त-सा पथों पर गा उठता था। जिसमें अहंकार नहीं था किंतु जागरूक स्वामी रक्तबीज की भाँति बार-बार उठता था और जिसकी मुखरित चंचलता एक दिन काशी को गुँजाया करती थी। यही था वह कुलीन, जो मनुष्य से प्रेम करना जानता था। यही था वह धनी जो उन्मुक्त हाथों से अपने वैभव को दरिद्र का आँचल भरने के लिए लुटाया करता था। वह भक्त था, वैष्णव था और उसमें जीवन का सहज गर्व था। वह इतना प्रचंड था कि उसने अपना महत्त्व विदेशियों के अधिकार को भी मनवा दिया था। वह निर्भीक व्यक्ति देश में सुधार करता घूमता था। उसने अतीत के भव्य गौरव का स्वप्न साकार कर दिया था। उसके प्रेम गीतों ने सारे भारत को ढँक दिया था। यही था वह जो अपनी खाल बेचने को तैयार था परंतु याचक से ना नहीं कर सकता था। मल्लिका को वाद्य ध्वनियों में झूमते भारतेंदु का रूप याद आया। सारी रात्रि कविता की बातें करते निकल जाती थी परंतु इस व्यक्ति ने कभी छोटी बात नहीं की, जैसे वह किसी निम्नकोटि की बात के लिए नहीं जन्मा था। राजा-महाराजा, पंडित सबने उसे भारतेंदु कहा था। क्यों ? क्योंकि वह नेता था। उन्होंने साहित्य, धर्म, देश, दारिद्र्य मोचन और कला और... और... अपमानिता नारी के उद्धार के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। क्या वह मनुष्य था !

और आज ! आज वह मलिन-सा पड़ा है किंतु उसके नेत्रों में वही चमक है। क्षीणकाय हो जाने पर भी होंठों पर अब भी वही क्षमाभरी आशुतोष और अपराजित मुस्कराहट है।

मल्लिका चिल्ला पड़ी - 'स्वामी !' और दारुण वेदना से भारतेंदु के पाँव पकड़कर फूट-फूटकर रोने लगी।

×× ××

अध्यापक रत्नहास ने देखा। लोगों की आँखें गीली हो गई थीं। उसने कहा, ''और उसके बाद...'' किंतु एक व्यक्ति उठ खड़ा हुआ। उसने धीरे से कहा, ''उसके बाद सब जानते हैं अध्यापक महोदय। भारतेंदु के जलाए दीपक से असंख्य दीपक जल उठे। आइए, बाहर बाग में चलते हैं। आज हमने इसी संबंध में भारतेंदु के जीवन से संबंधित एक नाटक खेलने का आयोजन किया है। उसका नायक हरिश्चंद्र ही है, हिंदी गद्य का पिता..... भारती का सपूत !''

('भारती का सपूत' उपन्यास से)

— ० —

शब्दार्थ :

कौतूहल = जिज्ञासा
तारतम्य = सामंजस्य
तादात्म्य = अभिन्नता, एकरूपता
क्षीणकाय = दुर्बल, जर्जर शरीर

टिप्पणी : 'भारती का सपूत' जीवनीपरक उपन्यास के कुछ प्रमुख अंशों को यहाँ उद्धृत किया है ।
विद्यार्थी अधिक जानकारी के लिए पूरा उपन्यास जरूर पढ़ें ।

स्वाध्याय

आकलन

१. (अ) 'आप क्यों ऐसों के लिए सिर खपाते हैं...' वाक्य में 'ऐसों' का प्रयोग इनके लिए किया गया है...

(१) .....

(२) .....

(३) .....

(आ) लिखिए –

भारतेंदु का व्यक्तित्व

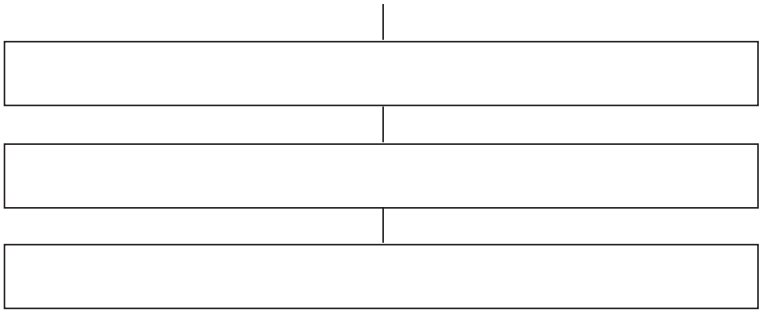

(इ) अंतर लिखिए –

मिशन के स्कूल	भारतीय स्कूल
(१)	(१) .....
(२)	(२) .....

शब्द संपदा

२. निम्नलिखित शब्दों के भिन्नार्थक अर्थ लिखकर उनसे अर्थपूर्ण वाक्य तैयार कीजिए :

दिया – ....

दीया – ....

सदेह – ....

संदेह – ....

जलज – ....

जलद – ....

अपत्य – ....

अपथ्य – ....

उद्दाम – ....

उद्यम – ....

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'भाषा राष्ट्र के विकास में सहायक होती है', इसपर अपना मत लिखिए।

(आ) 'व्यक्ति की करनी और कथनी में अंतर होता है', इस उक्ति पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न

४. (अ) भारतेंदु ने कुल के गर्व को दुहराने के बजाय देश के गर्व को दुहराया....' पाठ के आधार पर बताइए।

(आ) 'भारती का सपूत' के आधार पर भारतेंदु की उदार प्रवृत्ति का वर्णन कीजिए ।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :

(अ) रांगेय राघव जी की रचनाओं के नाम –

.....

.....

(आ) भारतेंदु द्वारा रचित साहित्य –

.....

.....